नई कविता की प्रवृत्तियाँ →

1. आत्माभिव्यक्ति एवं आत्मसम्पन्नता → यह प्रवृत्ति छायावाद की देन है जिसे नयी कविता में महत्वपूर्ण स्थान मिला है। अज्ञेय की कविताएँ — 'दीप अकेला' 'नदी के द्वीप' भारतभूषण की हवा 'मुक्तिबोध' एवं शमशेर की कुछ रचनाएँ इस कोटि में आती हैं।

2. छायावादी रूमानियत' — गिरिजा कुमार माथुर, धर्मवीर भारती, नरेश मेहता, शकुंत माथुर, कुँवर नारायण, कीर्ति चौधरी, रवीन्द्र भ्रमर, राजेन्द्र किशोर आदि की रचनाओं में छायावादी रूमानियत एवं प्रकृति से सौन्दर्य तत्व स्पष्ट होते हैं।

जीवन वैषम्य की अनुभूति — नयी कविता यथार्थोन्मुख होने के साथ-साथ मानव जीवन की विषमताओं को समाविष्ट करती रही है। लघु मानव की विषमता एवं विवशता को नयी कविता ने सार्थक रूप से व्यंजित किया है।

4. जीवन की विविधता का अंकन — नयी कविता में जीवन के विविध रूपों का अंकन बड़ी स्पष्टता से हुआ है। काव्य सौन्दर्य के अंतर्गत सुन्दर तथा कुरूप कोमल तथा कठोर सभी रूपों को उभारा गया है।

5. व्यंग्य की प्रधानता — आधुनिक जीवन की कुटिलता और दुर्बलता पर नये कवियों ने तीखे व्यंग्य किये हैं।

6. अनास्थामय रूप विधान — इस प्रवृत्ति को मुख्य प्रयोगवादी कवियों की रचनाएँ अपनी अलग पहचान लेकर आयी हैं।

7. लघु मानव की प्रतिष्ठा — नयी कविता में महामानव की जगह लघु मानव की प्रतिष्ठा की प्रवृत्ति मिलती है। यथार्थ में मजदूरों और किसानों के स्थान पर कीड़े-मकोड़ों तथा भूत गायों के स्थान पर छिपकली और केंचुए ...

8. चमत्कार प्रदर्शन — नयी कविता के बीच एक प्रवृत्ति बौद्धिक प्रदर्शन की भी रही है जिसके आधार पर कुछ कविता कारों को विज्ञापन, चौंकाने एवं व्यर्थ का वाक्जाल खड़ा करने का प्रयत्न किया गया है।

9. प्रबंधत्व की शैली में आधुनिक युगबोध — नये कवियों में कुछ ने प्रबंधत्व की शैली में आधुनिक युग बोध को व्यंजित करने का प्रयत्न किया है। लघु कविताओं से थोड़ा हटकर कथात्मक शैली में यह नूतन प्रयोग है।

10. प्रकृति सम्बन्धों में नवीनता — नयी कविता ने जिस प्रकार अपने नाम की सार्थकता संदर्भों की नवीनता के साथ बनाई, वैसे ही प्रकृति संबंध भी नये ढंग से स्थापित किये। नये कवियों ने पहचानी प्रकृति को न तो अपनाया पर कल्पनात्मकता, भावात्मकता प्रधान और कवि सापेक्ष प्रकृति को आपरूप कर लिया प्रायः सभी नये कवियों में यह प्रवृत्ति मिलती है।

नयी कविता की भाषा शैली — भाव की तरह शिल्प के क्षेत्र में भी नयी कविता अपनी अलग पहचान लेकर चली। कवियों ने शिल्प के सभी अंगों में नवीनता दिखायी। प्रकार • भाव ने नये अलंकार योजना, बिम्बविधान और उपमानों के नये प्रयोगों पर आग्रह व्यक्त किया। भाषा, ध्वनि, छंद आदि विविध क्षेत्रों में नवीनता दिखाई पड़ी लेकिन नयी कविता पर सर्वाधिक विवाद उसकी भाषा शैली को लेकर उठाया गया।

इसकी भाषा पर जो आरोप लगाये गये वे इस प्रक

1. नयी कविता गद्यात्मक है।
2. इसकी भाषा व्याकरण सम्मत न होकर दोषपूर्ण
3. नयी कविता में प्रयुक्त प्रतीक, बिम्ब, उपमान बासी अप्रच
4. इसमें साधारणीकरण की क्षमता नहीं है।
5. इसमें रस अलंकार गुण और शक्तियों का अभाव
6. नयी कविता स्वदेशी न होकर विदेशी भाषागत संस्कारों से प्रभावित है।

उपर्युक्त आरोपों के सम्बन्ध में हमारी धारणा है कि इनमें से अधिकांश बातें आंशिक रूप से नयी कविता पर लागू होती हैं। इन आरोपों के अतिरिक्त कई ऐसे गुण भी नयी कविता में विद्यमान हैं जिनकी ओर विद्वान आलोचकों ने ध्यान नहीं दिया। नयी कविता सम्बन्धी दुरूहता, गद्यात्मकता, उपमानों की असहजता, साधारणीकरण की अक्षमता का परिहार नयी कविता के उन [illegible] नाम कवियों ने भी आगे चलकर किया है जिनकी रचनाओं पर ये आरोप लगाये जा रहे थे।

यदि भाषा विकास के संदर्भ में नयी कविता का मूल्यांकन किया जाये तो उसमें भाषा को नवीन संस्कार देने की प्रवृत्ति लक्षित होगी। छायावाद ने प्राचीन काव्य भाषा को नवीन संस्कार देकर कोमल स्वप्निल और अतीन्द्रिय बनाया।

इस संक्षिप्त चर्चा के उपरान्त यह निष्कर्ष निकलता है कि नयी कविता भाव भाषा आदि सभी दृष्टियों से पूर्ण सक्षम है और निरन्तर विकास करती जा रही है।

Scanned with CamScanner